P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

श्रीमद्भागवत पुराण में निहित शैक्षिक तत्व

सारांश

''विद्या भागवतावधिः'' भागवत विद्या का भण्डार[1] है। वेदव्यास रचित अट्ठारह पुराणों में श्रीमद्भागवत को महापुराण माना गया है। श्रीमद्भागवत ज्ञान, भक्ति और कर्म का अनूठा ग्रन्थ[2] है। इस ग्रन्थ में विश्व का संपूर्ण ज्ञान निहित है। शिक्षा नीति, इतिहास, भूगोल, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन, कला, सामाजिक–व्यवहार, प्रकृति[3], वनस्पति[4], ग्रह[5], नक्षत्र[6], ज्योतिष[7], मूल्य[8], कर्तव्याकर्तव्य[9], जीवनचर्या आदि के अनेक उदाहरण इसमें निहित ज्ञान को सत्यापित करते हैं। शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षक[10], शिष्य[11], पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, विद्यालय तथा अनुशासन सहित जीवन के वास्तविक लक्ष्य का विशद् वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराण में प्राप्त है। विविध आख्यानों के माध्यम से व्यासजी ने मनुष्य को देवत्व की ओर बढ़ने का इस ग्रन्थ में मार्गदर्शन किया है।

मुख्य शब्द : श्रीमद्भागवत पुराण, वेद

रतन कुमार भारद्वाज
प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
लालकोठी स्कीम, जयपुर,
राजस्थान, भारत

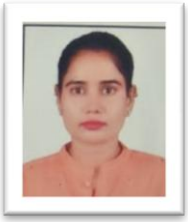

अंजू सुसावत
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

भारतीय वाङ्मय के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों के अनन्तर यदि श्रीमद्भागवत को विश्वकोष की संज्ञा दी जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं है। चूंकि वेद समझने में कठिन है, अतः प्राचीन सभ्यता–संस्कृति के अध्ययन और जीवन को सुखमय बनाने के लिए भागवत प्रशस्त मार्ग ही सर्वोत्तम मार्ग है।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार शिक्षा का अर्थ

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते[12]। ज्ञान, शिक्षा एवं विद्या पर्याय शब्द हैं। तथापि इनमें सूक्ष्म भेद भी है। किसी भी देश या समाज की सांस्कृतिक, बौद्धिक व वैज्ञानिक प्रगति उस देश की शिक्षा पर निर्भर करती है। समाज के विकास के लिए शिक्षा का विकास होना चाहिए।

शिक्षा के शाब्दिक अर्थ में सीखना–सिखाना ही सम्मिलित है, किन्तु वास्तविक अर्थ में शिक्षा का अभिप्राय अन्तर्दृष्टि का विकास है। ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' शिक्षा अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। शास्त्रों के अध्ययन के बाद भी यदि व्यक्ति शिक्षा का सम्यक् सदुपयोग न करे तो वह मूर्ख ही कहा जाएगा। शिक्षा संस्कार निर्मात्री है। शिक्षा से जो ज्ञान प्राप्त होता है उससे व्यक्ति की कार्यक्षमता विकसित होती है। शिक्षित व्यक्ति राष्ट्रसेवा, पठन–पाठन, आजीविका, पोषण, विकास तथा उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि समाज की प्रगति[13] का मूल कारक 'शिक्षा' ही है।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

भागवत के अनुसार शिक्षा का परम लक्ष्य व्यक्तित्व निर्माण है। व्यक्ति का सर्वतोमुखी[14] विकास हो। वह स्व, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के कल्याण के लिए सद्मार्ग का अनुसरण करे। उसका नैतिक व चारित्रिक विकास उच्च कोटि का हो। 'शिक्षा' ज्ञान प्रदायिनी है, किन्तु इसे चरित्र निर्मात्री कहा जाए तो अधिक प्रासंगिक है। सामाजिक एवं नागरिक कर्तव्यों के ज्ञान एवं व्यवहार के विकास का दायित्व शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। व्यक्ति एक ही होता है, किन्तु वह पिता, पुत्र, गुरू, शिष्य, सेवक, स्वामी भाई, पति, पड़ौसी, नागरिक, यात्री , उद्यमी व भोक्ता भी है। इन सभी रूपों में उसका क्या दायित्व है तथा कैसे इन भूमिकाओं का निर्वहन करना चाहिये, यही प्रशिक्षण शिक्षा से प्राप्त होता है। वर्तमान काल में उपार्जन[15], अतिथि सेवा, परिवार का सम्यक् भरण–पोषण, मर्यादापूर्वक जीवन[16] जीने की कला सिखाना शिक्षा का तात्कालिक उद्देश्य है। बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, सांवेगिक, समायोजन शक्ति, संस्कृति संरक्षण आदि शिक्षा के चिर उद्देश्य हैं जिनका वर्णन श्रीमद्भागवत में उपलब्ध है।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार शिक्षक

सान्दीपनी[17], ब्रहस्पति[18], शुक्राचार्य[19] आदि गुरूओं के वर्णन से भागवत् में शिक्षक के स्वरूप का प्रकटीकरण होता है। एक श्रेष्ठ शिक्षक[20] में सत्य,

अपरिग्रह, दया, परोपकार, क्षमा, दम, तितिक्षा, पक्षपात शून्यता, उत्साह वर्द्धन योग्यता तथा उत्तम आचरण होना चाहिये। आचरणात् अचिनोतिऽति आचार्यः।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार शिष्य

भागवत के अनुसार शिष्य दो प्रकार के होते है, उत्तम एवं अधम। उत्तम शिष्य[21] गुरू के उपदेशों व आचरण का पूर्णतया पालन करता है। शिष्य को विनयी, आज्ञापालक, संयमी, सत्यवादी, सदाचारी, अहिंसक, क्रोध रहित, लोभ व मोह रहित, परोपकारी तथा संतोषी होना चाहिये।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार पाठ्यक्रम

श्रीमद्भागवत पुराण ज्ञान का अपूर्व ग्रन्थ है। इसमें प्रकृति, ब्रह्माण्ड[22] एवं जीवन का संपूर्ण ज्ञान सन्निहित है। श्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण के लिए इन सबका अध्ययन कराया जाना चाहिये। श्री कृष्ण का चरित्र व्यावहारिक जीवन यापन का अद्वितीय उदाहरण है। ब्रज के प्राकृतिक उपादानों में नदी, पर्वत[23], वनस्पति, पशु–पक्षी, आदि का विस्तृत वर्णन प्राकृतिक ज्ञान प्राप्ति का संकेत करता है। भागवत के पळचम स्कन्ध में ब्रहमांड के सभी नक्षत्रों[24] का विस्तार से वर्णन मिलता है। उनके नाम, स्थिति, गति व प्रभाव के वर्णन को आज का विकसित विज्ञान भी सत्यापित करता है। इनके अतिरिक्त पाठ्यक्रम में संगीत, नृत्य, कला, इतिहास, दर्शन, विज्ञान, चौंसठ विद्याएँ, गणित, भाषा, स्थापत्य, युद्ध–आयुधादि को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिये। योग, योगासन, स्वास्थ्य, शरीर रचना, मल्लविद्या, ज्योतिष, रसायन एवं आयुर्वेदादि विषय पाठ्यक्रम के अंग होंगे।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार शिक्षण विधियाँ

श्रीमद्भागवत पुराण के आख्यानों और चरित्रों से शिक्षण की महत्वपूर्ण विधियों का ज्ञान होता है। उपदेश, संवाद, प्रश्नोत्तर[25], उपाख्यान, व्याख्या, व्याख्यान, विश्लेषण, दृष्टांत, तर्क, संश्लेषण एवं अनुमानादि विधिया शिक्षा में प्रयोग की जानी चाहिये। यम, नियम, निदिध्यासन, ध्यान, धारणा एवं अनुभवादि विधियों का श्रीमद्भागवत में वर्णन उपलब्ध है।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार विद्यालय

औपचारिक विद्यालयों के रूप में यद्यपि गुरूकुलों[26] का विद्यालयों के रूप में वर्णन मिलता है, किन्तु अनेक दृष्टांत दर्शाते है कि शिक्षा कहीं भी कभी भी संभव है। अभिमन्यु[27] को गर्भ में शुक्राचार्य[27] ने यज्ञस्थल पर तथा ऋषियों ने कथास्थलों पर ज्ञान प्रदान किया। देश, काल, पात्र एवं परिस्थिति शिक्षा स्थल को निर्धारित कर सकती है।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार अनुशासन

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सुख चाहता है। सुख भौतिक भी है आध्यात्मिक[28] भी। नैतिक एवं अनुशासित जीवन इन दोनों सुखों का प्रदाता है। व्यक्ति का आचरण ऐसा होना चाहिए जिससे किसी अन्य प्राणी का अहित न हो। असामाजिक कृत्य न हो। मूल्य आधारित जीवन निर्माण सच्ची शिक्षा का द्योतक है। व्यक्ति को आत्म अनुशासित होना चाहिए।

निष्कर्ष

श्रीमद्भागवत के अंत में उल्लेख है कि श्री कृष्ण के परधाम गमन के अनन्तर श्रीमद्भागवत ही कृष्ण का स्वरूप है।[29] इसके आचरण से व्यक्ति को भौतिक एवं आध्यात्मिक[30] सुख प्राप्त होता है। श्रीमद्भागवत की शिक्षाएँ समसामयिक संदर्भ में अत्यधिक व्यावहारिक एवं प्रासंगिक हैं।

अंत टिप्पणी

1. *श्रीमद्भागवत : गीताप्रेस गोरखपुर, इकहत्तरवाँ संस्करण, प्रथम खंड संवत् 2068 नम्र निवेदन पृ. 3*
2. *श्रीमद्भागवत : गीताप्रेस गोरखपुर, इकहत्तरवाँ संस्करण, प्रथम खंड संवत् 2068 नम्र निवेदन पृ. 3*
3. *श्रीमद्भागवत : पंचम स्कन्ध, गीताप्रेस, गोरखपुर 71वां संस्करण, संवत् 2068 पृष्ठ संख्या – 3*
4. *श्रीमद्भागवत महापुराणम् : चतुर्थ स्कन्ध, अट्ठारहवाँ अध्याय, गीताप्रेस गोरखपुर संवत् 2065, 29वाँ संस्करण, पुनर्मुद्रण*
5. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : चतुर्थ स्कन्ध, अटठारहवाँ अध्याय,*
6. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : पंचम स्कन्ध, बाईसवाँ अध्याय।*
7. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : पंचम स्कन्ध, इक्कीसवाँ अध्याय।*
8. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : सप्तम् स्कन्ध, सत्रहवाँ अध्याय।*
9. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : सप्तम् स्कन्ध, चौदहवाँ अध्याय।*
10. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : चतुर्थ स्कन्ध, तेरहवाँ अध्याय।*
11. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : दसम् स्कन्ध, पैंतालीसवाँ अध्याय।*
12. *श्रीमद्भागवत, गीताप्रेसगोरखपुर, इकहत्तरवाँ संस्करण, प्रथमखण्ड, संवत् 2068 पृष्ठ संख्या 3*
13. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : द्वादश स्कन्ध, पांचवाँ अध्याय, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत् 2065 पुनर्मुद्रण, 29वाँ संस्करण*
14. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : सप्तम् स्कन्ध, ग्यारहवाँ अध्याय*
15. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : सप्तम् स्कन्ध, चौदहवाँ अध्याय*
16. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : पंचम स्कन्ध, चतुर्थ अध्याय*
17. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : दसम् स्कन्ध, पैंतालीसवाँ अध्याय*
18. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : षष्ठ स्कन्ध, सप्तमोंध्याय अध्याय*
19. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : अष्टम् स्कन्ध, इक्कीसवाँ अध्याय*
20. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : एकादश स्कन्ध, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ अध्याय।*
21. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : चतुर्थ स्कन्ध, तेरहवाँ अध्याय।*
22. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : द्वितीय स्कन्ध, प्रथम व पांचवाँ अध्याय।*

23. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : दसम स्कन्ध, पच्चीसवाँ अध्याय।*
24. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : पंचम स्कन्ध, इक्कीस तथा बाईसवाँ अध्याय।*
25. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : दसम् स्कन्ध, पैंतालीसवाँ अध्याय।*
26. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : दसम् स्कन्ध, पैंतालीसवाँ अध्याय।*
27. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : प्रथम स्कन्ध, आठवाँ अध्याय।*
28. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : अष्टम् स्कन्ध, इक्कीसवाँ अध्याय।*
29. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : एकादश स्कन्ध, नम्र निवेदन, गीताप्रेस गोरखपुर, 29वाँ पुनर्मुद्रण, संवत 2065 पृष्ठ संख्या – 4*
30. *श्रीमद्भागवत महापुरणम् : एकादश स्कन्ध, चौबीसवाँ अध्याय।*